कविता / बिकाऊ

हरीश कुमार

कहीं बिक रहे विधायक,
सांसद हैं कहीं बिकाऊ,
कहीं पूरी सत्ता बिक गई,
क्या लोकतंत्र है बिकाऊ?

कोई बेचे कोई खरीदे,
हर माल है बिकाऊ,
पैमाना बस एक है,
बिकाऊ हो सत्ता साथ,
और दिखे टिकाऊ।

कस्बे में इकट्ठी हुई भीड़,
झंडे लहराए भिन्न प्रकार,
गला फाड़कर चिल्ला रहे,
पार्टी समर्थक जिंदाबाद।

मंडी लगी विधायकों की,
हर पार्टी का बिकाऊ है माल,
पार्टी प्रधान लगाएं भाव,
कब्जे में आए सरकारी माल,

मंडियां लगती चुनाव से पहले,
फिर लगे मंडी चुनाव के बाद,
प्रत्याशियों के भाव कम लगें,
निर्वाचित के भाव होते कमाल,

कोई फर्क नहीं पड़ता,
अपराधी हो या गुनहगार,
भाव मिलेगा तभी भरपूर,
समर्थन से अगर बने सरकार।

सत्ता की कुंजी हाथ में आई,
खूब खाओ सरकारी मलाई,
समझो फिर 'सरकारी' माल,
अपना ही जैसे बाप का माल,
वोट लिए जिन अंधभक्तों के,
वह दिखाई दें ज़हर समान।

बेच एयर इंडिया हाकिम ने,
खरीदे सात सितारा जहाज ,
छिना निवाला अवाम का,
बदले भिन्न-भिन्न लिबास,
शानो-शौकत में फर्क नहीं,
मगर लुत्फ उठाए बेहिसाब।

बिकाऊ हो जब हर माल,
आवाम का हो बुरा हाल,
कुचली जाए जब हर जुबान,
समझो तुम अब बनोगे गुलाम।

जल्द ही मुल्क बनेगा फिर
"लोकतंत्र से गुलामतंत्र"

इलाहाबाद शहर के वास्तविक संस्थापक थे सम्राट अकबर!

इलाहाबाद शहर के मूल संस्थापक अकबर थे। अकबर की देन से इलाहाबाद आज भी जिंदा है। मैं इलाहाबादियों से पूछता हूँ आज भी गंगा यमुना की बाढ़ से शहर को कौन बचाता है। अगर अकबर का बनवाये बांध न हो तो आज भी इलाहाबाद का अस्तित्व एक बरसात ही है।

जो इलाहाबाद को जानते हैं मैं उनसे पूछता हूँ अकबर के बांध के पहले इलाहाबाद में आबादी की संभावना कैसे रही होगी। गंगा-कछार के धरातल से भी नीचे है अल्लापुर अलोपीबाग बैरहना और तुलारामबाग टैगोरटाउन का धरातल। सिविललाइंस कटरा और मम्फोर्डगंज का कुछ हिस्सा ऊँचा है। भारद्धाज आश्रम और आनंद भवन के आसपास भी कुछ ऊँचे भूभाग है। यहाँ तब भी मुनियों के आश्रम रहे होंगे। लेकिन आबादी का कहीं कोई जिक्र नहीं है।

इलाहाबाद वालों जो आपको दो महान नदियों की बाढ़ की विभीषिका से बचाता है वह निर्माण हुमायूँ के पुत्र अकबर का है। दारागंज से एलनगंज के बीच लगभग 2 किलोमीटर का बांध। जिसे आप अब केवल बांधरोड कहते हो। दूसरी ओर जमुना के तट को बांधा।

अकबर के पहले के मध्यकाल में उस इलाके में शासन और सत्ता के केन्द्र कड़ा मानिकपुर जौनपुर और चुनार थे। अकबर ने संगम पर एक मजबूत किला बनवाकर क?ा और कोसम की जगह जंगलों वन और डूब वाली भूमि पर एक नगर संभव किया।

जिसे भी मेरी इस स्थापना पर आपत्ति हो वह बताए कि बांधों का चौतरफा घेरा जब न था तो गंगा का पानी बघा?ा वाले कछार से और जमुना की ओर से शहर में दाखिल होने से कौन रोकता था।

आप नाम बदलो। हारे हुए लोगों और उनके नगरों के नाम बदले जाने की एक सामंती परम्परा रही आई है। लेकिन अकबर ने काशी, अयोध्या मथुरा हरिद्वार उज्जैन विन्ध्याचल मैहर चित्रकूट इन बड़े तीर्थों

के नाम क्यों नहीं बदले? अगर काफिरों को नीचा दिखाना होता तो ये बदलाव व्यापक प्रभाव डालते। रोचक बात है कि किसी नदी का नाम नहीं बदला गया। किसी पहा? किसी झरने का नाम नहीं बदला गया। पूरे मुगल सरकार में । गंगा यमुना सरयू चंबल केन बेतवा बरुणा गंडक सोन घाघरा व्यास झेलम रावी सिंध चेनाब सुतलज जंमू तवी किसी नदी नाले का नाम नहीं बदला। हिमालय हरिद्वार से मंगाकर गंगा जल पीता रहा अकबर।

कितने कम दूरंदेश थे मुगल। अकबर तो पूरा मूर्ख था सूर्यसह्नाम रटने में लगा था। टोडरमल खत्री बीरबल पाण्डे मानसिंह कछवाहा को नवरत्न बनाकर सरकार चलाता रहा। हारे लोगों के भगवानों के प्रिय भगवान राम और सीता के नाम पर सिक्के जारी करना यह बताता है कि पराजितों के समूल नाश की मानसिक औकात नहीं थी उसमें। और उसका नवरत्न मानसिंह बरसाने में राधारानी का मंदिर बनवाता रहा। सरकार की नाक के नीचे। वह मंदिर आज भी मान मंदिर के नाम से मौजूद है। विधर्मियों की धार्मिक संस्थापनाएँ होती रहीं और अकबर तानसेन से रागरागिनी सुनता रहा।

तुलसीदास राम का चरित गाते रहे उसके शासन में। सूर की कृष्ण लीला वृंदावन में चलती रही। पूरी भक्ति कविता गाई गई उस अकबर की सरकार में। उसे रोकना होता तो यह साहित्य सृजन रोकना था। उल्टे उसका एक प्रिय सिपहसालार कवि रहीम तो वैष्णव हो गया। पुष्टि मार्ग का अनुयायी। बीस भाषाओं का ग्यानी फारसी तुर्की अरबी संस्कृत का प्रकांड पंडित होकर ब्रज में बरवै और नीति के दोहे रचता रहा।

हारे लोगों की भाषा संस्कृति से प्रेम करने वाले मूर्ख थे सब मुगल। रहीम को फारसी से हिलना नहीं था और तुलसी सूर कुम्भन सबको दो थप्पड़ लगा कर आगरे से लेकर अगरोहा तक कहीं कैद रखना एक अपराजेय सम्राट के लिए इतना कठिन काम तो न रहा होगा। उसे जौनपुर में पुल नहीं बनवाना था। बस जौनाशाह की जगह हर नये पुराने निर्माण को अकबर द्वारा तामीर किया गया की मुनादी करवानी थी।

लेकिन तब उसके इंतकाल पर जौनपुर इलाहाबाद मीरजापुर बनारस शोक में न डूबते। यहाँ के बाजार हफ्तों अपने शहंशाह के जाने का मातम न मनाते। अकबर के समकालीन कवि बनारसीदास जैन के अर्धकथानक में अकबर के न रहने का शोक देखा जा सकता है।आप अकबर के संस्थापित शहर का नाम बदलो। लेकिन जन के मन से खुरचकर अकबर को मिटाने की क्या तरकीब निकालोगे?

नोट 1-अकबर ने सियाराम सिक्का जारी किया। नीचे उसका चित्र नीचे दे रहा हूँ । अकबर के सिक्के की जानकारी मुझे पहलीबार गीताप्रेस की कल्याण पत्रिका से मिली थी। वह अंक अभी भी मेरे पास है।

2-अकबर द्वारा इलाहावास या इलाहाबाद की नींव डालने का संदर्भ पृष्ठ भी यहाँ जो? दिया है। यह प्रयाग प्रदीप नामक किताब का एक पृष्ठ है। जो मूल रूप से इलाहाबाद का एक जीवंत और प्रमाणिक इतिहास है। इसके लेखक श्री सालिग्राम श्रीवास्तव जी हैं। यह किताब 1937 में हिंदुस्तानी अकादमी से प्रकाशित है। यहाँ दिए पृष्ठ में तीन लाल निशान वाले स्थान देखें।

1- "गंगा यमुना के बीच की सुरक्षित भूमि" नगर नहीं भूमि।

2- प्रयाग में ठहरा जिसे लोग प्राय: "इलाहाबास" कहते थे।

और

3- और प्रयाग में जहाँ गंगा यमुना का जल एक साथ पहुँचता है, एक नगर की नींव डाली और कुछ किलों को भी बनवाया।

तथ्य यही है कि प्रयाग एक तीर्थ भर था। यहाँ कुछ मंदिर और पुजारी थे। मुनियों के आश्रम ते। लेकिन कोई नगर न था। नगर की नींव सम्राट अकबर ने डाली। उस भूभाग को "इलाहाबास" स्थानीय लोग कहते थे। वह इलावास की ही स्मृति थी जो बिगड़ कर इलाहाबास के रूप में बनी रही। अकबर ने नींव पूज कर नगर बसाया। आप उसके द्वारा स्थापित शहर का नाम बदल कर नगर का इतिहास बदल रहे हैं। यह अन्याय है। अराजकता है। कुराज है। अनैतिहासिक कदम है।

"हां मैं दोषी हूं. मुझे गंभीर सजा दें या पद से इस्तीफा दे दें"

कृष्ण कांत

मार्च, 1922 में महात्मा गांधी पर देशद्रोह का मुकदमा चला. आरोप था कि उन्होंने अपने अखबार यंग इंडिया में तीन ठो लेख लिखकर जनता को भड़काया है. मामला जस्टिस सीएन रूमफील्ड की कोर्ट में पहुंचा. पहली सुनवाई में ही 11 मार्च, 1922 को थी. तीनों लेख कोर्ट में पढ़े गए. जस्टिस ब्रूमफील्ड ने कहा कि ये आरोप ब्रिटिश भारत में सरकार के प्रति असंतोष फैलाने के प्रयास से जुड़े हैं.

गांधी जी बोले, देखो अंगरेज बहादुर जी, अइसा है कि नाटक नय, जो लिखा है सो लिखा है. जो लिखा है वह सत्य है और मेरे लिए सत्य ही ईश्वर है. मैं अपने लिखे की जिम्मेदारी लेता हूं. जो सजा देना हो दे दो. ये लेख मैंने ही लिखे हैं. हां, मैं अपराधी हूं.

ब्रूमफील्ड ने पूछा कि क्या आप दोष स्वीकार करते हैं या अपना बचाव करना चाहते हैं? इस पर महात्मा ने कहा, मैं सभी आरोपों के लिए खुद को दोषी स्वीकारता हूं.

जस्टिस ब्रूमफील्ड अपना फैसला देना चाहते थे, लेकिन सरकारी वकील सर जेटी स्ट्रेंजमैन ने कहा कि भाई मुकदमे की प्रक्रिया तो पूरी होनी चाहिए. उन्होंने कहा कि इन लेखों में अहिंसा पर तो जोर दिया गया है, लेकिन अगर आप लगातार सरकार के प्रति असंतोष को हवा देते हैं तो इसका मतलब है कि जानबूझकर सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए लोगों को भड़का रहे हैं. सजा सुनाते समय बंबई, मालाबार और चौरी-चौरा में दंगे व हत्याओं का ध्यान रखा जाना चाहिए. इसमें भी महात्मा की भूमिका है. यही जनता को भड़काते हैं.

जस्टिस ब्रूमफील्ड ने महात्मा से पूछा कि सजा के सवाल आपका क्या कहना है? महात्मा ने कहा, 'मैं अपने बारे में सरकारी वकील की टिप्पणी को सही मानता हूं. मैं कोर्ट से छिपाना नहीं चाहता कि सरकार की मौजूदा प्रणाली के खिलाफ असंतोष का प्रचार करना मेरे लिए एक जुनून बन गया है. यह मेरा कर्तव्य है, जिसे मुझे निभाना होगा. मैं बंबई, मद्रास और चौरी-चौरा की घटनाओं को लेकर लगाए गए आरोपों को स्वीकार करता हूं. मुझे लगता है कि चौरी-चौरा हो या बंबई दंगे, मैं इनसे खुद को अलग नहीं कर सकता. मुझे छोड़ा गया गया तो मैं फिर ऐसा ही करूंगा.

मैं हिंसा से बचना चाहता था. अहिंसा मेरे विश्वास का पहला तत्व है. लेकिन, मुझे अपना चयन करना था. या तो मैं एक ऐसी व्यवस्था के सामने समर्पण कर देता, जिसने मेरे देश को नुकसान पहुंचाया था या अपने लोगों के गुस्से का जोखिम उठाता. इसलिए मैं एक हल्की सजा के लिए नहीं बल्कि इस अपराध में सबसे बड़ी सजा के लिए तैयार हूं. मैं दया के लिए प्रार्थना नहीं करता. मैं इस मामले में सबसे बड़ी सजा भुगतने को तैयार हूं. न्यायाधीश के रूप में आपके लिए केवल एक रास्ता खुला है कि या तो आप पद से इस्तीफा दे दें या मुझे गंभीर सजा दें.

मुझ पर धारा-124ए के तहत आरोप लगाए गए हैं. यह कानून नागरिकों की स्वतंत्रता को दबाने के लिए बनाया गया है. मेरा मानना है कि अगर किसी के मन में एक व्यक्ति या व्यवस्था के खिलाफ असंतोष है तो उसे विरोध की आजादी होनी चाहिए. मुझे लगता है कि सरकार के प्रति असंतुष्ट होना पुण्य माना जाना चाहिए. मेरी राय में बुराई के साथ असहयोग

करना अच्छाई के साथ सहयोग करने से ज्यादा जरूरी है. मैं यहां मुझे दी जाने वाली बड़ी से बड़ी सजा के लिए तैयार हूं. बयान काफी लंबा चौड़ा है. कम लिखा ज्यादा समझना.

महात्मा के बयान के बाद जस्टिस ब्रूमफील्ड ने उनके सामने सिर झुकाया और कहा, एक न्यायसंगत सजा निर्धारित करना बहुत मुश्किल है. मैंने अब तक जितने भी लोगों के खिलाफ सुनवाई की है या भविष्य में सुनवाई करूंगा, आप उन सबसे अलग व्यक्ति हैं. आपसे राजनीतिक मतभेद रखने वाले लोग भी आपको उच्च आदर्शों पर चलने वाले और संत के तौर पर मानते हैं. इसके बाद जस्टिस ब्रूमफील्ड ने बापू को छह साल कैद की सजा सुनाई. सजा सुनाते हुए उसने कहा कि अगर सरकार इस सजा को कम कर दे तो मुझसे ज्यादा खुश कोई नहीं होगा. इसके बाद उन्होंने एक बार फिर महात्मा गांधी के सामने सिर झुकाया. इस पर महात्मा गांधी ने कहा कि कोई भी जज मुझे इस अपराध में इससे कम सजा नहीं दे सकता था.

इस केस को ग्रेट ट्रायल के नाम से जाना गया. महात्मा को साबरमती जेल ले जाया गया. दो दिन बाद यरवादा जेल भेज दिया गया.

तो हे गांधी को गरियाने वाले भइया लोग! सबक ये है कि जिस अंगरेज बहादुर के लिए आपने मुखबिरी की, गिड़गिड़ाए, रोए, रिरियाए, वही अंगरेज बहादुर महात्मा के आत्मबल के आगे सिर झुकाकर यहां से गया है. बाकी झूठ फैलाने वाले अंगरेजीदां फर्जी इतिहासकार मनोहर कहानियां लिखते रहें, गांधी की महानता पर घंटा फर्क पड़ने वाला है. आपकी ये चकल्लस बड़ी सस्ती और अश्लील है.

महात्मा अमर रहें.